

संगम (विवृत्ति)

किसी ने चर्चा में बताया कि बचपन में वे मनोविनोद के लिए यों ही 'बतासा ले' के लिए बता-साले तथा मरसा-ले (साग विशेष) के लिए मर-साले का उच्चारण करते थे। उस समय व्याकरण नियमों का ज्ञान न होने से उनके लिए यह मनोविनोद की बात थी किन्तु बाद में जब उन्हें व्याकरणिक नियमों का अध्ययन करने को मिला, तब उन अनर्गल बातों को सोचकर हँसी आती है।

व्याकरण का नियम है कि उच्चारण करते समय यदि यह ध्यान नहीं रखा जाता है कि जिन शब्दों का हम प्रयोग कर रहे हैं, उन्हें एक साथ बोलना अथवा पढ़ना है, अथवा कुछ हल्का सा विराम देकर; तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अतः शब्दों के मध्य उचित विराम देकर बोलना अथवा पढ़ना चाहिए। इस उचित विराम देकर बोलने अथवा पढ़ने को ही 'संगम' कहा जाता है। कुछ अन्य उदाहरणों से इसे और भी स्पष्ट किया जा सकता है।

1. वह रेतीला मैदान जल-सा दिखाई देता है। (जल+सा)
आज हमारे नगर में जलसा है। (जलसा)
2. रोहित के पिता का रण में देहांत हो गया। (का+रण)
इसी कारण वे आज नहीं आए। (कारण)
3. लड़के लड़ के आ रहे हैं। (लड़+के) लड़ाई करके
4. असरकारी काम ही असर कारी सिद्ध होता है। असर+कारी (प्रभावकारी)
कुछ अन्य शब्दों के अर्थ और उनके प्रयोग को भी जानिए —

1. सिरका - एक तरह का तरल पदार्थ
सिर+का - सिर से सम्बन्धित
2. मनका - माला का दाना
मन+का - मन से सम्बन्धित
3. मोतीलाल- नाम है
मोती+लाल- मोती और लाल (रत्न)
4. पीलिया - रोग विशेष
पी+लिया- पीने का काम समाप्त हो गया।
5. मरमरा गया- मरमराहर की ध्वनि से सम्बन्धित।
मर+मरा गया- मृत्यु से सम्बन्धित

अतः इस प्रकार शब्दों का प्रयोग करते समय संगम (विवृत्ति) को ध्यान में रखकर ही उच्चारण एवं लेखन करना चाहिए।